नवोदित साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका

प्रवेशांक अप्रैल २०२४

उदयांचल

सम्पादक

उदय राज वर्मा "उदय"

मूल्य - नि:शुल्क

https://hindilekhak.com/Patrika

वर्ष - १ / अंक - १
प्रवेशांक अप्रैल २०२४

मूल्य - निःशुल्क

हिन्दी लेखक परिवार की एक और कड़ी

उदयांचल

नवोदित हिन्दी साहित्य की त्रैमासिकी "वेब-पत्रिका"

प्रधान सम्पादक
मनिक (हिन्दी लेखक परिवार)
सम्पादक
उदय राज वर्मा 'उदय'
संयुक्त सम्पादक
उमाकांत भारती

पता
उदय राज वर्मा 'उदय'
छिटेपुर सैंठा गौरीगंज अमेठी
उत्तर प्रदेश 227409
9151382715
uday951704@gmail.com

नोट - सभी पद अवैतनिक है तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। कॉपीराइट की स्थित में उत्तरदायी लेखक का होगा। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र केवल अमेठी (उत्तर प्रदेश) होगा और साभार पुनर्प्रकाशन की अनुमति है।

अनुक्रम

प्रधान सम्पादक की कलम से
दो शब्द

कहानी

स्त्री का अस्तित्व	नीरू पन्त
जूते	मनोज सेवलकर
बहादुर लवी	केशरलता साहू
खंजरीला घाट	भूपेन्द्र सिंह
औरत	जानवी रवतानी

काव्य सुमन

अनिल कुमार केसरी, भूपेन्द्र सिंह, प्रो. शरद नारायन खरे,
चाँद बहार, जयचन्द प्रजापति 'जय', डॉ मूरत सिंह यादव,
मीनू सिंह, रमोने लोंग्कू, रोहताश वर्मा 'मुसाफिर',
सुप्रिया श्रीवास्तव, पल्लवी श्रीवास्तव, अली अंसारी 'अलि',
शिखा खुराना, इन्द्रिरा शर्मा
पुस्तक समीक्षा-

प्रधान सम्पादक की कलम से

साहित्य में प्रेरणास्रोत

साहित्य हमें समाज की अनदेखी बातों को सोचने और समझने की दिशा में प्रेरित करता है। यह एक ऐसा साधन है जो हमें मनोविज्ञान की अद्भुत गहराई तक ले जाता है और हमें अपने जीवन की अनगिनत रंगों के साथ अटखेलियां करने का अवसर देता है।

उदयांचल का सम्पादन साहित्य के इस महान परिणाम का समर्थन करता है और नये रंगों को उसमें जोड़ता है। हमारा उद्देश्य है कि हम समृद्ध साहित्यिक विचारों का प्रसार करें, जो विभिन्न विचारशील लेखकों द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं।

***

मनिक
हिन्दी लेखक परिवार

दो शब्द

सर्वप्रथम आप सभी से क्षमा चाहता हूँ क्योंकि उदयांचल की घोषणा वर्षों पहले की गई थी लेकिन किसी कारणवश उस समय साकार नहीं हो सकी। लेकिन उदयांचल मेरे दिमाग में छाई रही और उदयांचल का प्रवेशांक अब आपके समाने है।

उदयांचल लाने की बात उस समय आई जब देखा कि साहित्य में बाजारीकरण हावी हो गया है बिना पेमेंट के कोई रचना स्वीकार नहीं होगी| स्वीकार हो गई तो लेखकीय प्रति के लिए पैसा दो वो भी डिजिटल अंक के लिए, आप साहित्यकार हैं या विजनेसमेन? हिन्दी और हिन्दी साहित्य का भला ऐसे करेंगे? रचनाकार को नहीं दे सकते तो मत दो कम से कम लेखकीय प्रति तो दो। नहीं तो डिजिटल प्रति तो निशुल्क दे दो भाई और इतना भी नहीं कर सकते तो काहे के हिन्दी व साहित्य प्रेमी? और आप साहित्यकार हैं या विज्ञापन दाता? या खुद की योग्यता पर संदेह है? अगर नहीं है तो ये सार्ट कट रास्ता क्यों? ये सवाल मेरा नहीं है एक बार खुद से पूछो। दुनिया के हर बड़े साहित्यकार की रचनाएँ लौटायी गई हैं निराला जी की प्रसिद्ध रचना जूही की कली को केचुआ छंद कहकर उपहास के साथ लौटायी गई।

पत्रिका निकालने में समय और धन दोनों देना पड़ता है समय भी आपको देना पड़ेगा और धन भी अगर विज्ञापन की व्यवस्था नहीं हो पाती है तो, और इतिहास साक्षी है कि विज्ञापन के अभाव में बहुत सी पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो गया लेकिन ये भी सच आपको स्वीकार करना पड़ेगा कि पैसा लेने वाली पत्रिकाएँ बंद हो गई।

उदयांचल की आयु आपके स्नेह पर निर्भर करती है। त्रुटियां रहना स्वाभविक है जिसकी जिम्मेदारी के साथ क्षमाप्रार्थी हूँ और आशा करता हूँ कि त्रुटियों को तूल न देकर सुझाव के साथ उसे दूर करने व पत्रिका को बेहतर बनाने में आप तनिक भी पीछे नहीं हटेंगे। अंत में उदयांचल परिवार की तरफ से आप सभी को राम नवमी, रमजान, बैसाखी, अम्बेडकर जयंती और महावीर जयंती की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाओं के साथ आपका आशीर्वाद और स्नेह बना रहे।

***

उदय राज वर्मा 'उदय'

राम के गुण

राम अवतार हैं, राम दशरथ-कौशल्या नंदन हैं।
राम सत्य के प्रतीक हैं, राम पुरुषार्थ हैं।
राम ब्रह्मस्वरूप हैं, राम मनमोहक हैं।
राम कीर्ति हैं, राम यश हैं।
राम हर - जनों का विश्वास हैं।
राम गुणगान हैं, राम श्रद्धा एवं रक्षक हैं।
राम चिरंतन हैं, राम मर्यादा से सुशोभित हैं।
राम एक पत्नीव्रत हैं, राम पुरुषों में उत्तम हैं।
राम शरणागत हैं, राम सुरनायक हैं।
राम सुखदायक हैं, राम करुणा के सागर हैं।
राम अद्भुत हैं, राम दीनों के दयाल हैं।
राम अंतर्यामी हैं, राम सब जगह व्याप्त हैं।
राम सच्चिदानंद हैं, राम सृष्टि के सृजनकर्ता हैं।
राम बारिधि के मंदर हैं, राम सुख के पुंज हैं।

~ पल्लवी श्रीवास्तव

स्त्री का अस्तित्व

हिन्दी लेखक परिवार

स्त्री हो या पुरुष, सबका अपना अस्तित्व होता है। हर कोई स्त्री को एक सौम्यता की छवि के रूप में देखना पसंद करता है। एक स्त्री के मनोभावों को समझिए वह क्या कहना चाहती है। मैं एक स्त्री हूं मेरी मांग में सजा सिंदूर मेरे सुहाग की निशानी है जो कि मेरे जीने की ताकत है। यही सिंदूर अगर कोई मुझे गलत दृष्टि से देखें तो उसके लिए खतरे की निशानी है। मेरी आंखों में ममता के भाव है यह ममता भरी झुकी हुई आंखों को जरूरत पड़ने पर आंखों में आंखें डाल कर बात करना भी आना चाहिए। मेरे कान झुमको से सजे हुए अगर मीठे भजनों को सुन कर आनंद प्राप्त करते हैं तो वह किसी की गलत बातों

को कभी नहीं सुन सकते। मेरे अंदर प्यार, ममता और स्नेह की ताकत है तो गलत व्यवहार में कठोर बनकर दूसरे पर नाराजगी प्रकट करने की हिम्मत भी होनी चाहिए। मेरे हाथों में चूड़ी और मेरे पैरों में पायल की खनक शोभा देती है। विकट परिस्थिति में लड़ने के लिए कराटे सीख कर हाथ पैर चलाने भी मुझे आने चाहिए। जिससे कि मैं अपनी रक्षा कर सकूं। स्वभाव से कोमल होने के कारण अगर मैं हमेशा सबको माफ कर देती हूं तो गंभीर परिस्थितियों में दंड देना भी मुझे आना चाहिए। अगर मैं शांत सुशील और विनम्र रहकर परिवार को संभालने का काम करती हूं और इसे अपना कर्तव्य समझती हूं तो अपने विरुद्ध हुए गलत व्यवहार में मुझे आवाज उठाना भी आना चाहिए। अगर मैं बच्चों को हमेशा प्यार करती हूं और उचित राह दिखाती हूं और उनके लिए सब कुछ करने के लिए तत्पर रहती हूं तो उनके द्वारा बोले गए ऊंचे शब्दों का मुझे तुरंत विरोध करना चाहिए और जरूरत पड़ने पर उन पर हाथ उठाने में भी संकोच नहीं करना चाहिए| अगर वह गलत हैं तो यह भी मेरा ही कर्तव्य है कि मैं उनके गलत व्यवहार को सहन न करूं।सौम्य सुशील और विनम्र बनकर अपने सारे कर्तव्य और फर्ज पूरे करने चाहिए लेकिन जहां पर अपना अपमान हो रहा हो या अपने मान सम्मान में ठेस पहुंच रही हो तो वहां पर खुलकर विरोध भी करना चाहिए लेकिन सम्मानजनक शब्दों के साथ। अपने अस्तित्व को बनाकर रखने वाली और अपने कर्तव्यों को पूरा करने वाली स्त्री ही एक संपूर्ण स्त्री कहलाती है।

स्त्री का मान सम्मान और अस्तित्व ही एक परिवार का गहना होता है इसलिए हर स्थिति को अपने मान सम्मान और अस्तित्व को बनाए रखना चाहिए।

स्त्री के हर रूप का
सम्मान तुझे ही करना है
अपमान तुझे न सहना है
अपमान किसी का न करना है
तू मर्यादा की मूरत है
तुझ पर ही दुनिया टिकती है
तेरे अस्तित्व की लाज पर
हर परिवार की इज्जत सजती है।

~ नीरू पंत
D104, अंतरिक्ष गोल्फ व्यू २, सेक्टर 78 नोएडा २०१३०१

जूते

~ मनोज सेवलकर
2892/ई सेक्टर सुदामा नगर इन्दौर

विधानसभा चुनाव की तारीख घोषित होते ही राजनीति में गर्माहट आ गई। टिकट किसको मिलेगा और किसको नहीं ये धर्म संकट पार्टी में बना हुआ था। सभी छुटभैये नेता अपने अपने कयास लगा रहे थे। ऐसे ही एक नेता जी को लगा कि पार्टी उन्हें पिछले चुनाव की सफलता के आधार पर पुनः उम्मीदवार घोषित कर सकती है।

अब बुलावा कब आ जाये कह नहीं सकते लेकिन प्रचार प्रसार के लिए सीमित समय मिलेगा इसलिए वे अपनी तैयारी को जांचने के लिए आनन-फानन में जूट गये। उन्होंने अपनी वही पुरानी तिलस्मी अचकन, जैकेट, टोपी आदि को जांच लिया लेकिन जूते पहने तो वे पांव में सख्त हो रहे थे। अब जूतों के बिना घर घर दस्तक देना असम्भव होगा। वे तत्काल उसी जूते की दुकान पर पहुंचे जहां से लिए जूतों ने उन्हें पिछले चुनाव में जीत दिलाई थी।

दुकानदार ने आवभगत कर उन्हें उनके मनपसंद जूते पहना दिए। दुकान में लगे आईने में अपनी भावी विधायक की छवि देख वे मंद-मंद मुस्कुरा अपनी मूंछों पर ताव दे ही रहे थे कि तभी मोबाईल फोन घनघना उठा। दूसरी ओर से आ रही आवाज कानों में जैसे जैसे गूंज रही थी वैसे वैसे उनके चेहरे की चमक फीकी और बनावटी होती जा रही थी। अब उनके कदम जिस तेजी से दुकान की ओर बढ़कर आये थे वे उन्ही जूतों को पहन धीमे-धीमे घर की ओर लौट रहे थे।

प्रेम
एकांकी अनुभव

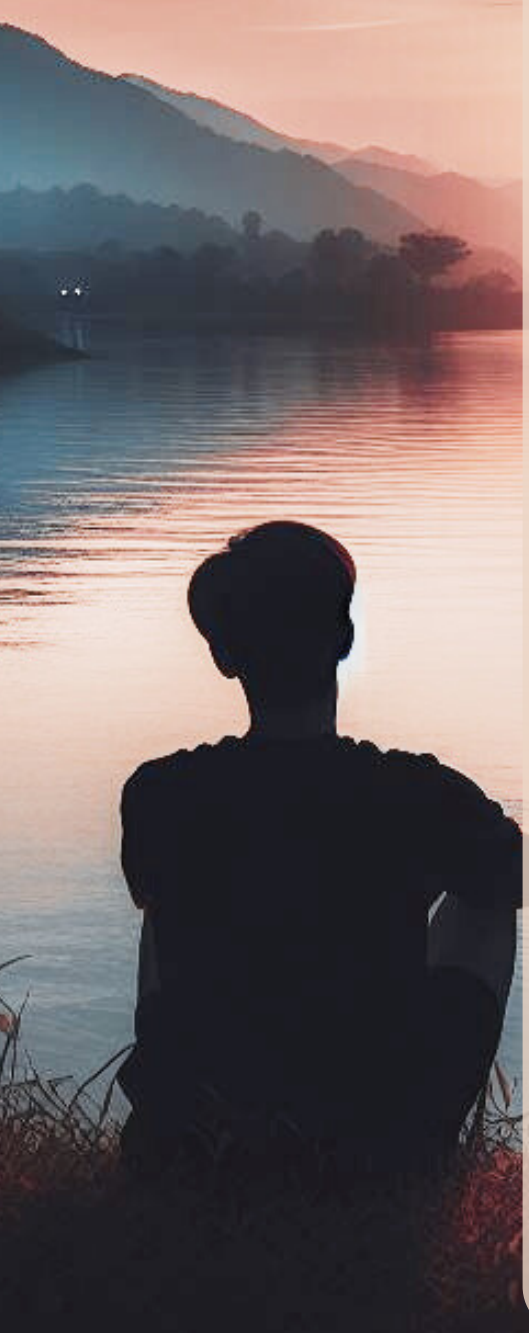

समुद्र के किनारे एक ऊंची चट्टान पर बैठे-बैठे रवि सोच रहा था कि आज इस मुकाम पर पहुंचा है, वह सही है या इतने वर्षों में जो हुआ था वह सही था। वह फैसला नहीं कर पा रहा था, उसका मन समुद्र की लहरों की भांति ऊपर नीचे हो रहा था। सोचते हुए उसकी आंखों से आंसू अपने आप बह रहे थे। वह चाह रहा था कि एकदम ठंडे दिमाग से सोचे, मगर आंसू थे कि थमने का नाम नहीं ले रहे थे। बहते ही जा रहे थे। इसी बीच उसके जेहन में ३० वर्ष पूर्व की बातें चलचित्र की तरह आने लगी और वह उसमें उलझता सा चला गया। लगभग ३० वर्ष पूर्व उसने शीतल को पहली बार अपने शहर में देखा और देखता ही रह गया। शीतल को देखते ही उसे लगा कि वह

हमेशा जिसे अपनी कल्पनाओं में, अपनी सोच में, अपने सपनों में देखता रहा, यह वही है। उस पर वह मर मिटा था और उसे पहली ही नजर में उससे प्यार हो गया। शीतल पास के किसी दूसरे शहर में रहती थी। आज वह अपने किसी रिश्तेदार के यहां रवि के शहर आई हुई थी। वह रवि की भी कहीं दूर के किसी रिश्ते में कुछ लगती थी, इसलिए वह उसे देख कर रुकी और उससे बातें करने लगी। रवि का ध्यान उसकी बातों में बिल्कुल भी नहीं था। वह तो बस शीतल को निहार रहा था। कभी उसका ध्यान उसके चांद जैसे चेहरे पर जाता तो कभी उसके कपड़ों पर, कभी उसके खुले बालों की लट पर, जो उसके गालों को छूती हुई गर्दन के ऊपर लटक रही थी, तो कभी उसकी उन चमकीली आंखों पर जो आज ३० वर्षों बाद भी उसके दिल दिमाग में छाई हुई है। शीतल एक बहुत ही खूबसूरत और आकर्षक व्यक्तित्व की मलिका थी, जिसे देखकर रवि अपने आप से बेगाना हो चुका था।

समय अपनी गति से चल रहा था। दिन पर दिन बीतते चले जा रहे थे। रवि के मन में शीतल कुछ इस तरह समा गई कि उसकी आंखों में, उसकी यादों में, उसके विचारों में, उसके ख्यालों में, यहां तक कि उसके सपनें में भी शीतल और सिर्फ शीतल ही रहती थी। वह शीतल की एक झलक पाने के लिए कितनी बार उसके शहर तक चक्कर लगा आता, मगर शीतल के सामने जाने से डरता। उसे दूर से ही सबसे नजरें बचाकर, नजरें चुरा कर देख लेता। लेकिन कभी उससे अपने दिल की बात नहीं की।

शायद यह उसके आत्मविश्वास की कमी थी, जो उसे अपने प्यार का इजहार करने से रोकती थी। उसे अपने साधारण व्यक्तित्व के कारण लगता था कि शीतल उसके प्यार का सम्मान नहीं करेगी। इस तरह रवि के मन की बात उसके मन में ही दबकर रह गई और शीतल को उसके प्यार का एहसास नहीं हो पाया।

समय के साथ घरवालों के बढ़ते दबाव के कारण ना चाहते हुए भी रवि को शादी करनी पड़ी। उसकी शादी के १-२ वर्ष बाद उधर शीतल की भी शादी हो गई। संयोग से शीतल उसके जान पहचान में ही दुल्हन बनकर आई। शीतल को सामने देखकर रवि के मन में दबा हुआ प्यार एक बार फिर जोर मारने लगा, मगर शीतल की बसती हुई गृहस्थी के कारण उसने अपने प्यार को अपनी धरोहर समझ कर अपने मन में छुपा लिया।

शीतल से उसकी बात अक्सर हुआ करती थी, मगर कभी भी उसने अपने दिल की बात को जुबान पर आने नहीं दिया, रवि अभी भी चोरी-छिपे सबकी नजरें बचाकर शीतल को निहारता था। कभी नजरें मिल जाती तो वह इधर-उधर देखने लग जाता था। रवि शीतल की सारी बातें मानता था। वह जो कह देती, उसे बिना सोचे-समझे पूरा करता, भले उसके लिए उसे कोई भी कीमत चुकानी पड़े। साल दर साल बीत रहा था और रवि के अंदर शीतल का प्यार एक धरोहर बन कर पल रहा था। इस तरह १०-१२ वर्ष बीत गए।

रवि को वह नव वर्ष की शाम आज भी याद है जब वह समुद्र किनारे

खड़ा ढलते सूरज की लालिमा को निहार रहा था। तभी वहां शीतल आई और उसने सहज भाव से हाथ मिलाते हुए उसे नए वर्ष की बधाई दी थी। वह शीतल का पहला स्पर्श था जो उसे एक नया एहसास दे गया। शीतल का जन्मदिन नव वर्ष की १ तारीख को आता और रवि उसे बड़े प्यार से जन्मदिन की बधाई देता। उसे लगा जैसे आज उसका जीवन सफल हो गया। यह उसके स्पर्श उसके प्यार में एक नया अध्याय जोड़ उसके दिल में दबे हुए प्यार को एक बार फिर जगा गया। इसी तरह हर बार वह उसके जन्मदिन का और इस स्पर्श के लिए पूरे साल इंतजार करने लगा कि कब नया साल आए और वह शीतल के हाथ को अपने हाथ में ले और उसे जन्मदिन की बधाई दें।

इधर शीतल यह जानती तक नहीं थी कि रवि उससे इस कदर प्यार करता है। वह तो सिर्फ यह जानती थी कि रवि उसे बहुत ज्यादा मान-सम्मान देता है। शीतल जब भी रवि से मिलती उससे बड़ी बेपरवाही से बात करती, उसे अपना हमदर्द मानती थी। उसे जरा भी abhas नहीं था कि रवि के मन में क्या है। शीतल की बेपरवाही ने समय के साथ रवि के मन में यह भावना भर दी कि शायद शीतल के दिल में भी उसके लिए कोई जगह बन गई है और वह भी मन ही मन रवि को चाहती है, इसलिए आज से २ महीने पहले बातों ही बातों में रवि ने शीतल से अपने ३० वर्षो से छुपाए हुए प्यार का इजहार करते हुए कह डाला है कि वह उससे प्यार करता है। वह उसे

अच्छी लगती है, उसे उसका स्पर्श अच्छा लगता है। इस इजहार के बाद उसे खुद आश्चर्य होने लगा कि आज जिस बात को उसने ३० वर्षों से अपने दिल में छुपा कर रखा था, उसे कहने की हिम्मत उसमें कहां से आ गई, जबकि रवि शीतल के स्वभाव को अच्छी तरह से जानता था कि उसके लिए प्रेम-प्यार की बातें आज के समय में बेकार और बेमानी है, क्योंकि उसका पति ही उसके लिए सब कुछ है। यह भी हो सकता है कि उसकी बात सुनकर शीतल भड़क जाए और कुछ उल्टा ही रिएक्ट करें, उसे यह डर सताने लगा और वह चुपचाप अपने घर आ गया। फिर शीतल ने उसे अपने घर बुलाया तो वह डर गया और कहीं भाग जाने की सोचने लगा। फिर उसे लगा कि आज नहीं तो कल सामना तो होगा ही, इसलिए जो भी हो वह हो जाना चाहिए। वह भगवान को याद करते हुए शीतल के घर की ओर चल पड़ा। उसके घर पहुंचा तो देखा उसके घर में बिल्कुल सन्नाटा है, यह सन्नाटा उसे और भी डरा रहा था। उसने दरवाजे की घंटी दबाई तो शीतल ने ही दरवाजा खोला। दरवाजा खुला छोड़कर ही वह वापस मुड़ी और अंदर की ओर चल पड़ी। वह दरवाजे से अंदर आया और दरवाजा बंद कर उसके पीछे-पीछे मंत्रमुग्ध होकर चलने लगा। वैसे तो रवि पहले कितनी ही बार इस घर में आया था मगर आज अंदर जाने में उसका मन और शरीर तनिक भी साथ नहीं दे रहा था।

उसे अभी भी लग रहा था कि वह पलट कर भाग जाए। शीतल हॉल में जाकर सोफे पर आराम से बैठ गई। रवि उसके गुस्से और अपने होने वाले अपमान का इंतजार करने लगा और सोचने लगा कि अभी बात मेरे और उसके बीच में ही है, क्यों ना उसे हाथ जोड़ विनती कर मना लूं कि इस बात को यहीं खत्म कर दे। वह शीतल के सामने हाथ जोड़कर खड़े होकर कुछ कहता, उसके पहले ही शीतल ने उसकी सोच के विपरीत बड़े ही संतुलित ढंग से उससे कहा, "रवि, अगर तुम्हें मुझसे इतना प्यार था, तुम मुझे इतना चाहते थे तो तुमने शादी के पहले मुझसे इसका इजहार क्यों नहीं किया? अब आज तुम कह रहे हो जबकि तुम जानते हो कि मैं और तुम किस स्थिति में है। आज हम दोनों अपनी शादीशुदा जिंदगी से पूरी तरह संतुष्ट है। अब मैं तुम्हें कहूं भी तो क्या कहूं।" उसने आराम से बात की और उसके उस प्यार का सम्मान किया, जिसे रवि ने पिछले ३० वर्षों से अपने दिल में दबा कर रखा था। यह सुनकर रवि की आंखों में आंसू आ गए और उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

शीतल को यह भी आश्चर्य हो रहा था कि रवि उसे पिछले ३० वर्षों से प्यार कर रहा है और उसे कभी इसका एहसास क्यों नहीं हुआ? उसकी महक तक उसे महसूस क्यों नहीं हुई? शीतल ने जब अपने बीते दिनों पर नजर डाली तो रवि की बताई एक-एक बात उसे सच

लगने लगी। उसे उसके प्यार का एहसास होने लगा और उसके प्यार की खुशबू भी महसूस होने लगी। शीतल के इस व्यवहार से रवि के मन का बहुत बड़ा संकट टल गया। उसने अपने मन की बात कहकर मन में दबे इतने सालों के प्यार का इजहार कर दिया, इससे उसके मन का भारी बोझ हल्का हो गया। रवि जब अपने प्यार की वह सारी बातें जो पिछले ३० वर्षों से उसके पास धरोहर थी, शीतल को बड़े ही अपनेपन और बारीकियों से बताने लगा और शीतल को भी उसकी प्यार भरी बातें अच्छी लगने लगी। वह भी बराबर उस का साथ देती रही, दोनों की जिंदगी में जैसे बहार सी आ गई। दोनों इस दीन-दुनियाँ से दूर अपने प्यार में खोने लगे और उनका प्यार परवान चढ़ने लगा। शीतल को लगने लगा कि प्यार इंसान की सबसे पहली जरूरत है। अगर उसे सच्चा प्यार मिल जाए तो धन-दौलत और सफलता अपने आप मिल जाती है। वह जब कार्य करता है तो एक हाथ उसका और एक हाथ उसके प्यार करने वाले का होता है और जब आदमी प्रसन्न रहता है, तो हर काम को उत्साह के साथ करता है और सफलता उसके कदम चूमती है। रवि प्यार की गहराई को जितना समझता था, वह तो कुछ भी नहीं था, प्यार तो उससे भी कहीं ज्यादा गहरा और विशाल था जो हर दिन उसे एक नई अनुभूति देता, उससे गहरा और गहरा एहसास करा जाता था। वे दोनों जितना एक दूसरे को नजदीक से जानते गए उतना ही उन्हें लगता गया कि उनकी आदत, विचार, व्यवहार, सोच, काम का ढंग, अपनी जवाबदारी, समाज की बातें और ना

जाने कितनी बातें एक जैसी लगती थी। उनको लगता था कि वे दोनों एक-दूसरे के लिए बने थे, मगर परिस्थितियों ने उन्हें जुदा कर दिया। इस तरह २ माह पंख लगाकर कब उड़ गए, पता ही नहीं चला। इन २ महीनों में उन दोनों ने एक-दूसरे को कई जन्मों का प्यार दे दिया। शीतल यह बात अच्छी तरह समझती थी कि प्यार और खुशबू छुपाए नहीं छुपती। उसका पता आज नहीं तो कल चल ही जाता है, इसलिए उसे दोनों के भविष्य की चिंता होने लगी। वह सोचने लगी कि अगर यह बात आज की इस परिवेश में सामने आती है तो दोनों का क्या हश्र होगा? दोनों का हंसता-खेलता पारिवारिक जीवन बर्बाद हो जाएगा और दोनों के पास सिवाय आत्महत्या के कोई रास्ता नहीं रह जाएगा। शीतल के लिए यह एक धर्म संकट की स्थिति हो गई कि अब वह क्या करें क्या नहीं। प्यार की तरफ झुकती है तो उसकी शादीशुदा जिंदगी दांव पर लग जाती है और अपनी जिंदगी के प्रति समर्पित होती है तो एक सच्चे प्यार को छोड़ना पड़ता है। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसे क्या करना चाहिए। वह सोच रही थी कि यह सब बातें रवि के सामने भी रखें ताकि वे दोनों मिलकर कोई निर्णय ले सके। उसे रवि के उतावलापन का भी एहसास था, क्योंकि वह उसे पागलों की तरह प्यार करता था। वह ऐसी कोई भी बात सहन नहीं कर सकेगा जो उसे शीतल से दूर करें। इसके बावजूद वह रवि से मिली और उसे अपने मन की बात बताते हुए कहा, "मैं नहीं जानती कि मैं प्यार के

किस मुकाम पर पहुंची हूं, लेकिन इतना जरूर जानती हूं कि इस धरती पर उसका एहसास स्वर्ग से बढ़कर है। वे लोग बहुत खुशनसीब होते हैं जिन्हें प्यार का एहसास इतने अंदर तक छूता है। यह वो चीज है जो हर किसी को नसीब नहीं होती, जिसे मिल जाए तो समझो उस पर भगवान मेहरबान है। मैं तो भगवान को धन्यवाद देती हूं जिसने मेरे अंदर प्यार के उस एहसास को जगाया जो शायद पहले कभी किसी के लिए मन में जागा ही नहीं। मगर आज हम जिंदगी के जिस मोड़ पर खड़े हैं, वहां इस प्यार का कोई अर्थ नहीं है, कोई मोल नहीं है। हमारे प्यार का कोई सुखद अंत तो होने वाला है नहीं, इसलिए हमारे लिए ख्वाबों की दुनियां से निकल कर अपनी हकीकत की दुनियां में लौट जाना ही बेहतर होगा। मैं ये भी नहीं कहती कि हम इस प्यार को भूल जाएं। हम इसे अपनी जिंदगी की सबसे अनमोल धरोहर समझ कर अपने-अपने मन में रख कर एक-दूसरे के प्रति अपना कर्तव्य निभाएं।" रवि का मन एकदम से बैठ गया। वह इस सच्चाई को मानने के लिए तैयार ही नहीं था। उसने सपने में भी सोचा नहीं था कि उसे इस तरह का निर्णय लेने पर मजबूर होना पड़ेगा। वह शीतल से कहने लगा," तुम मुझे जीने का एक उद्देश्य देकर अब मुझसे मेरे जीने की इच्छा मत छीनो। मैं तुम्हारे बगैर नहीं जी सकता। ठीक है, तुम मुझसे मिलो या ना मिलो, मुझे प्यार करो या ना करो, मगर मुझे इस तरह के बंधन में मत बांधो, जिससे मेरा दम घुट जाए और मैं मर जाऊं।" कहते-कहते रवि का मन वेदना से भर गया और उसकी आंखों में आंसुओं का

सैलाब उमड़ पड़ा। उसमें और बात करने की क्षमता नहीं रही। वह उसी स्थिति में शीतल से बिना कुछ कहे अपने घर की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उसके मन में द्वंद चलता रहा। उसका घर जाने का मन नहीं हुआ, इसलिए वह समुद्र के किनारे बैठ गया। बीती सारी घटना को याद करते-करते काफी वक्त बीत चुका था। अब तक उसका बेचैन मन काफी शांत हो चुका था। अब उसकी स्थिति कुछ सोचने समझने के लायक हो गई थी। उसके मन का वह जुनूनी तूफान गुजर चुका था जो उसे बेचैन किए हुए था। अब वह सहज हो गया, उसे शीतल कि वो सारी बातें फिर याद आने लगी जो उसने उन दोनों और उनके परिवार के भले के लिए कही थी। मगर रवि को अभी कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या अच्छा है और क्या बुरा? वह क्या फैसला करें? उसे तो केवल और केवल अपनी शीतल ही दिखती थी जिसे वह अपनी जान से ज्यादा चाहता था। अंत में उसके दिल ने यह फैसला किया कि शीतल की खुशी जिसमें है, वह वैसा ही करेगा। वह अपने आप से कहने लगा कि जिस प्यार के लिए मैंने इतने वर्षो तपस्या की, उसके लिए मैं यह सब करने और सहने को तैयार हूं। इसमें चाहे मेरी जान क्यों ना चली जाए। मन ही मन यह दृढ़ निश्चय कर वह अपने घर की ओर चल पड़ा। अब उसका मन एकदम शांत और सहज था, क्योंकि अब शीतल रवि के मन में एक अतीत की यादों की तरह रह गई थी।

~ पूजा गुप्ता

आदर्श स्कूल के सामने, भगवानदास की गली,
गणेश गंज, मिर्जापुर, (उत्तर प्रदेश)231001

क्या चल रहा है

~ अली अंसारी 'अलि'
महाराजगंज,उत्तर प्रदेश

हमारे यहां देख क्या चल रहा है।
भुला दो सभी को हवां चल रहा है।।
जमाना हुआ है दुश्मन सभी का।
बना प्यार धोखा यहां चल रहा है।।
करूं याद कैसे अगर ना रहो तुम।
रहो याद दिल में दवां चल रहा है।।
कभी दूर जाना बताना हमें भी ।
कहीं चाहतों का अदा चल रहा है।।
कसम खा रहे हो ना कोई हमारा।
कम से कम सगा चल रहा है।।
कभी बात बनती नहीं जो यहां पर।।
तराने सभी से वफ़ा चल रहा है।।
नहीं मानते हैं लगन जो लगा है ।
नतीजा दिलों का सदा चल रहा है।।
नहीं कोई अपना सहारा यहां है ।
बनाता वही रहनुमा चल रहा है।।
कभी तो कदर याद को भी करो ना ।
पता है "अली" क्या वहां चल रहा है।।

बहादुर लवी

केशरलता साहू
सिलिडीह, धमतरी, छत्तीसगढ़

एक समय की बात है, हरे-भरे, मंत्रमुग्ध जंगल के बीचों-बीच एक छोटा सा परिवार रहता था: माता केशु, पिता लव और उनकी प्यारी बेटी लवी। उनका घर एक आरामदायक झोपड़ी थी जो ऊंचे पेड़ों, रंग-बिरंगे फूल और चमचमाती नदियों से घिरी हुई थी। लेकिन अपनी मनमोहक सुंदरता के बावजूद, यह जंगल अपने छिपे खतरों के लिए भी जाना जाता था।

माता केशु बुद्धिमान एवं कुशल औषधि विशेषज्ञ थीं, जबकि पिता लव एक साहसी शिकारी थे, अपने परिवार का भरण-पोषण करने और उन्हें छाया में छिपे खतरों से सुरक्षित रखने के लिए कड़ी मेहनत की।

लवी, उनकी प्यारी बेटी, एक जिज्ञासु व साहसी बच्ची थी। उसे जंगल में घूमना, उड़ती तितलियों का पीछा करना एवं पक्षियों के गाने सुनना बहुत पसंद था। लेकिन उसके माता-पिता ने हमेशा उसे अपने घर से परे खतरों के प्रति आगाह किया।

एक दिन, एक उफनती नदी के पास खेलते समय, लवी की नजर लताओं के पर्दे के पीछे छिपी एक रहस्यमय गुफा पर पड़ी। अपने माता-पिता की चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए वह अंदर चली गई, उसका दिल उत्साह से धड़क रहा था। गुफा के भीतर उसे एक चबूतरे के ऊपर एक चमकता हुआ क्रिस्टल पड़ा हुआ मिला। उसकी सुंदरता से मंत्रमुग्ध होकर, लवी क्रिस्टल को छूने के लिए आगे बढी, लेकिन जैसे ही उसकी उंगलियां उससे टकराई गुफा कांपने लगी और प्रवेश द्वार एक विशाल चट्टान से अवरुध्द हो गया। अंदर फंसी लवी का दिल डर से भर गया क्योंकि उसके चारों ओर अंधेरा छा गया था। इस बीच, कुटिया में उसके माँ केशू व पिता लव को जब पता चला कि उनकी बेटी गायब है तो वे चिंतित हो गए और हताशा मे उसका नाम पुकारते हुए, उन्होंने जंगल में खोजबीन की।

जंगल के रहस्यों के बारे में अपने ज्ञान के साथ, उन्होंने सूक्ष्म सुरागों और रास्तों का अनुसरण किया जो उन्हें छिपी हुई गुफा तक ले गए। भीतर छुपे खतरों का सामना करते हुए, वे मोटे जालों को पार करते हुए खतरनाक बाधाओं पर विजय प्राप्त करते रहे जब तक कि वे उस कक्ष तक नहीं पहुंच गए, जहां लवी फंसी हुई थी। अपने माता-पिता को देखकर, लवी राहत से चिल्लाई, लेकिन उनकी खुशी अल्पकालिक थी क्योंकि गुफा उनके चारों

ओर ढह रही थी। त्वरित सोच और टीम वर्क के साथ, माँ केशु और पिता लव ने उन्हें गुफा की पकड़ से मुक्त कराने की योजना तैयार की।

पिता लव की ताकत और माता केशु के औषधि उपचार के ज्ञान का उपयोग करते हुये वे प्रवेश द्वार को अवरुध्द करने वाली चट्टान को हटाने और समय रहते भागने में सफल रहे। जैसे ही वे सूरज की रोशनी में उभरे, उन्होंने एक-दूसरे को कसकर गले लगा लिया, एक बार फिर से मिलने के लिए आभारी हुए। उस दिन के बाद से, लवी को अपने माता-पिता की चेतावनियों को सुनने और जंगल के खतरों का सम्मान करने का महत्व समझ में आया। एक साथ, एक परिवार के रूप में, वे अपने घर की सुंदरता को संजोते रहे और इस तरह छिपे हुये खतरों को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। यद्यपि उन्हें रास्ते में चुनौतिओं का सामना करना पडा, पर इसी बहाने उनका प्यार और एकता कायम रही, जिससे उनका बंधन पहले से कहीं अधिक मजबूत हो गया।

हिन्दी लेखक परिवार

विज्ञापन

जन भावनाओं से रुबरू करते हुए कहीं हंसाती तो कहीं सोचने पर मजबूर करती कविताओं से मुलाकात करवाती उदय राज वर्मा 'उदय' की पुस्तक धूप-छाँव

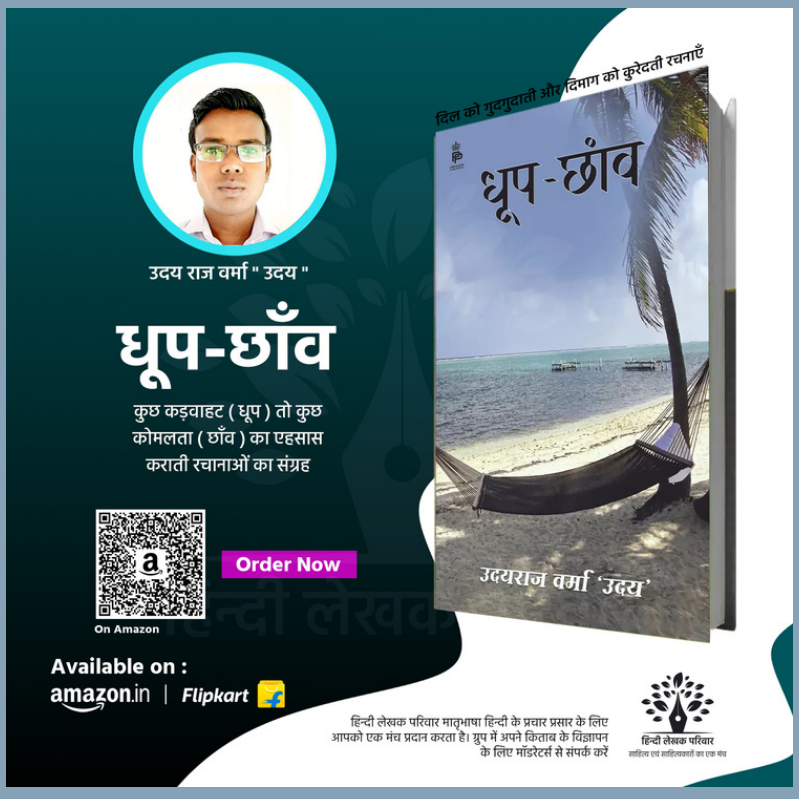

औरत

~ जानवी रवतानी
नई दिल्ली

औरत पंछी नहीं, ना उसके पंख होते हैं, फिर भी वो पूरी ज़िंदगी कैद रहती है, एक ऐसे पिंजरे में जो दिखाई नहीं देता। जन्म से शादी होने तक वो माता पिता के पास आज़ाद तो है, मगर बंदिशों के साथ, क्यूंकि भलाई उसी की है, जगह जगह बैठे गिद्दों से उस नन्ही चिड़िया को बचाना जो है। शादी हुई, कुछ वचन लिए गए, दिए गए, उम्रभर निभाने के लिए, क्या वो निभाए गए? पति ने साथ देने का वादा किया, और हां कई बार निभाया भी, लेकिन बच्चे होते ही फिर उड़ान रोकनी पड़ी, पहले पहला बच्चा, फिर दूसरा, वक्त बीतता गया, उम्र 30 के पार हुई, अब बच्चों का स्कूल, उनकी पढ़ाई ही प्राथमिकता है, साथ साथ पति की शिकायत कि तुम बच्चों की परवरिश में मुझे भूल गई, कभी ये न देखा कि वो खुद को भी भूल गई।

अब कुछ समय और भागा, अपनी गति के साथ,
बच्चों का career बनने की कगार पर और अपनी उम्र
40 के पार, अब तो बहुत ही अहम वक्त है,
किसका? बच्चों के भविष्य का
अब उम्र हुई 50 के पार, बच्चे set हो गए

इस बीच पतिदेव की ज़िंदगी में कुछ ज़्यादा बदलाव नहीं आया| वो उसी तरह अपने परिवार, अपने दोस्तों के बीच हैं| औरत कब अपना परिवार छोड़ इस नए परिवेश में खुद को ढाल चुकी, अपना अस्तित्व भुलाकर उसे खुद को ही होश न रहा और अगर इन सबसे हटकर वो कुछ करना चाहे, जैसे कि शादी न करना, मतलब उसमें कोई कमी है या कहीं उसका अफेयर है। शादी के बाद अगर पति साथ दे (बहुत rare conditions में) तो वो जोरू का गुलाम, और अगर दूर दराज नौकरी करना चाहे तो जगह जगह गिद्ध बैठे हैं नोचने के लिए, फिर उसे वो ही पति द्वारा दिया हुआ पिंजरा स्वीकार करना है

कुल मिलाकर जीने का वक्त तब मिलता है करीब 55-60 की उम्र में,जब जीने की, उड़ान भरने की, ना उमंग रहती है और न ही ताकत।

मुक्तक

~ भूपेन्द्र सिंह

पढ़ाई करने के तरीके हम पता लगाने निकले,
जो तरीके लगे थे हाथ, हम उनको आजमाने निकले,
उस गांव में जो करता था पढ़ाई से नफरत,
उसके तहखाने से किताबों के ठिकाने निकले।।

खंजरीला घाट

~ भूपेंद्र सिंह
पीलीबंगा, हनुमानगंज, राजस्थान

कड़ाके की सर्दी आने में अभी एक माह शेष था मगर फिर भी ठंड काफी हद तक दस्तक दे चुकी थी। रात को तो काफी ठंड हो जाती थी। आज इतवार का दिन था। इसलिए मैं घर में सोफे पर बैठकर अपने मोबाइल में कुछ उंगलियां मार रहा था। मैं एक टैक्सी ड्राइवर था। मेरे पास खुद की एक टैक्सी थी। मेरे गांव गोपालपुर और शहर के बीच में 20 किलोमीटर की दूरी थी। मैं इसी रूट से यात्रियों को लाता और ले जाता था। हालांकि इतवार को भी मैं चाहता तो जा सकता था लेकिन इस दिन कुछ खास मुसाफिर नहीं मिलते थे, इसीलिए मैं इतवार को छुट्टी लेना ही मुनासिब समझता था। मेरी पत्नी अनाया रसोईघर में खड़ी होकर शायद चाय बना रही थी। हालांकि पूरा तो मुझे भी नहीं मालूम था की वो क्या कर रही है। मैं तो बस बैठा-बैठा खाली अनुमान लगाए जा रहा था। इतने में रॉकी मेरे घर में आ घुसा।

रॉकी मेरा सबसे बड़ा जिगरी यार था। वो भी मेरी तरह एक टैक्सी ड्राइवर था और उसके पास भी खुद की कार थी। मेरी तरह वो भी इतवार को छुट्टी कर लेता था। वो मेरे पास आया और बोला – "कैसे हो दोस्त विजय?"

मैं – "मैं तो बिलकुल ठीक हूं। तू बता अचानक से यहां कैसे?"

रॉकी – "अरे कुछ नहीं यार बस घर पर अकेला बैठा बोर हो रहा था। इसलिए सोचा चलकर भाभी के हाथ की चाय पी लेता हूं।"

रॉकी के परिवार में और कोई भी नहीं था। मैंने यूं ही मजाक में उससे कहा- "मुझे लगता है रॉकी तुझे भी शादी कर लेनी चाहिए।"

रॉकी ने मेरी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और मुस्कुराते हुए मेरी पत्नी अनाया की और देखने लगा जो एक प्लेट में चाय के दो कप रखकर हमारी और बढ़ रही थी। रॉकी को आए हुए अभी सिर्फ दो मिनट ही हुए थे। "अनाया ने इतनी जल्दी चाय कैसे बना ली। मैंने तो चाय बनाने के लिए कहा भी नहीं था। जैसे अनाया को पहले ही मालूम था की रॉकी आने वाला था।" इस तरह के विचार मेरे मन में चलने लगे लेकिन मैंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

मेरी पत्नी ने कांच के टेबल पर हम दोनों दोस्तों के बीच चाय की प्लेट रख दी। तभी रॉकी बोला – "नमस्ते भाभी। न जाने कब से आपके हाथों की चाय पीने का मन कर रहा था। लव यू भाभी।''

मैं ये सुनकर शक भरी निगाहों से रॉकी की और देखने लगा तभी वो फिर बोला "लव यू भाभी योर चाय।''

ये सुनकर मैंने थोड़ी ठंडक महसूस की। रॉकी अब भी अनाया की और देखकर मुस्कुरा रहा था। अनाया भी रॉकी की और देखकर मुस्कुराए जा रही थी। न जाने क्यों मुझे अनाया की ये मुस्कुराहट बहुत चुभ रही थी। हम दोनों ने चाय पी और कुछ देर बातें करते रहे। इस तरह इतवार का दिन बीत गया। सोमवार से फिर से मेरा वही टैक्सी ड्राइवर का धंधा चालू हो गया। इसी तरह दिन बीत रहे थे।

एक दिन मेरी पत्नी ने मुझसे कहा – "उसकी मां की तबियत खराब है। इसलिए उसे आज ही अपनी मां के पास जाना होगा।"
मैं हैरान था क्योंकि मेरा पास तो शहर से कोई भी फोन नहीं आया था जबकि मेरी पत्नी का भाई रियान कोई गड़बड़ होने पर सबसे पहले मुझे ही कॉल करता था। लेकिन मैंने इस बात को अनदेखा कर दिया और रियान को फोन करना भी ठीक नहीं समझा। मैं फिर शाम को अपनी पत्नी को शहर में छोड़ने के लिए जाने लगा। आते वक्त मुझे रात हो गई थी। शहर जाने का एक ही रास्ता था जिसे लोग खंजरीला घाट कहते थे। क्योंकि एक घाटी के पास सड़क का एक पूरा ऊबड़ खाबड़ यू टर्न आता था। जहां चारों और नुकीले, एक खंजर के जैसे तीखे पत्थर लगे हुए थे। इस भूतिया और डरावने यू टर्न पर दो तीन दिनों के अंतराल से अक्सर कोई न कोई घटना होती ही रहती थी। अगर कोई अनजान व्यक्ति इस सड़क पर आ जाए तो समझो उसकी तो मौत पक्की क्योंकि ये यू टर्न दूर से बिल्कुल भी नज़र नहीं आता था। और अगर किसी ने यू टर्न नहीं

लिया तो वो नीचे घाट के घने जंगलों में गिर जाता था और हमेशा के लिए अपनी आंखे बंद कर लेता था। लेकिन वहां से गुजरना तो मेरा रोज का ही धंधा था। मैं इस रास्ते की हर एक कड़ी से परिचित था लेकिन फिर भी मुझे इस घाट के पास से गुजरते वक्त बहुत डर लगता था। मैं धीरे धीरे अपनी कार को चलाते हुए खंजरीली घाट की और बढ़ता चला जा रहा था। रात काफी हो चुकी थी। चारों और सिर्फ अंधेरा नज़र आ रहा था। एक जानलेवा सन्नाटा हर ओर पसरा हुआ था। कार की दोनों हैडलाइट चालू थी फिर सड़क पर अंधेरा नज़र आ रहा था। मुझे एक अजीब सी बैचेनी महसूस हो रही थी। अचानक से मुझे सामने सड़क पर एक सफेद सी आकृति नज़र आई। दूर से सबकुछ धुंधला नज़र आ रहा था। फिर मुझे धीरे धीरे सबकुछ साफ नज़र आने लगा। एक सफेद आकृति अपने दोनों हाथ फैलाकर आसमान की ओर मुंह करके जोर से चीख रही थी और अचानक से वो सड़क पर पीठ के बल गिर गई। ये देखकर उस ठंड की रात में मेरे भी पसीने छूट गए। मेरा पूरा बदन कांपने लगा। टांगे जवाब दे रही थी। मैने गाड़ी के ब्रेक लगाने चाहे लेकिन पैर इतने कांप रहे थे कि गलती से रेस पर पैर रख दिया। मेरी कार 80 की स्पीड पर पहुंच गई। मैं ये देखकर डर गया। मेरी कार सड़क पर पड़े उस साए के बिल्कुल पास चली गई। मैंने खुद पर काबू किया और जोर से कार के ब्रेक लगा दिए। कार के ब्रेक इतनी जोर से लगे की कार उसी जगह जाम हो गई। मेरा सिर स्टीयरिंग व्हील से जा टकराया और फट गया।

मैं उस सुनसान रात में बस बेहोश होकर रह गया। कम से कम मुझे दो घंटे बाद में होश आया। मेरा शरीर अभी भी कंपकंपा रहा था। मैं लड़खड़ाते हुए अपनी कार से बाहर निकला। सामने सड़क की और नजर दौड़ा दी लेकिन वहां कोई नहीं था। मैने चारों ओर नज़र दौड़ाई लेकिन कहीं पर कोई भी नज़र नहीं आया। पूरी खंजरिली घाट के आसपास कोई नज़र नहीं आ रहा था। मैंने डरते हुए कार स्टार्ट की और यू टर्न लेते हुए हॉस्पिटल की और चला गया। मैंने अपनी पत्नी को भी इस दुर्घटना के बारे में बताया लेकिन उसने सिर्फ इतना ही कहा - "अपना ध्यान रखो।"
उसने मुझसे ढंग से बात भी नहीं की थी। यहां तक कि उसने मुझसे ये भी नहीं पूछा कि मुझे कितनी चोट आई है। लेकिन मैंने सोचा कि उसकी मां कुछ ज्यादा ही बीमार होगी और शायद वो उसी चिंता में डूबी हुई हो। ये सोचते हुए मैने इस बात को अनदेखा कर दिया।

रात के बारह बज चुके थे। मैं अपने कमरे में अपने बिस्तर पर मजे से लेटा पड़ा था। तभी मुझे दरवाजे के पास किसी के होने की आवाज आई। मैं थोड़ा सा डर गया। मैंने कमरे की लाइट चालू की लेकिन वहां कोई नहीं था। मैं कंपकंपाते हुए शरीर के साथ खड़ा हुआ और दरवाजे के पास चला गया। मैंने डरते हुए दरवाजा खोला।

लेकिन बाहर कोई भी नहीं था। अगर था तो सिर्फ एक काला अंधेरा और एक जानलेवा सन्नाटा जो किसी को भी डरा दे। मैं डर गया। दरवाजा बंद करके मैं फिर से अपने बिस्तर पर आकर लेट गया।

इसी तरह दो तीन दिन गुजरे। मेरी पत्नी मुझे ले जानें के लिए कह रही थी। वो दो तीन दिनों से मुझे कभी कॉल करती तो कभी मेसेज करती कि "आई मिस यू।"

रात के दस बजे होंगे। मैं अपने कमरे में अपनी चेयर पर बैठा आग की गर्माहट महसूस कर रहा था। कल सुबह मुझे अपनी पत्नी को वापिस लेकर आना था ये सोचकर मैं काफी खुश था। अचानक से किसी ने दरवाजा खटखटाया। मैं पूरी तरह से डर गया। बदन में एक अजीब सी सिहरन दौड़ने लगी। मैं लड़खड़ाते हुए कदमों से दरवाजे की ओर बढ़ने लगा। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं? दरवाजा खोलूँ या न खोलूं? तभी फिर से किसी ने दरवाजा खटखटाया। मैने डरते हुए धीरे धीरे दरवाजा खोला और मैं दंग रह गया। मेरा दोस्त रॉकी दरवाजे के पास खड़ा था। वो बुरी तरह से डरा हुआ था। उसका बदन थर्र थर्र कांप रहा था जैसे की कोई भूत देख लिया हो? उसने अपने दोनों हाथ जोड़े और रोते बिलखते हुए बहुत ही दुख भरी आवाज में बोला – "मुझे बचा ले दोस्त, मैं मरना नहीं चाहता। वो दानव मुझे मार देगा।"

मैं उसकी बातें सुनकर डर गया। उसे अपने कमरे में लेकर आया और कुर्सी पर बिठाया और पूछा – "अरे हुआ क्या? कौन मार देगा तुझे? और तू किस दानव की बात कर रहा है?"

रॉकी लड़खड़ाती आवाज में डरते हुए बोला – "वो दानव! खंजरीली घाट वाला दानव वो ...वो.... मेरे पीछे पड़ा है।''

उसके मुंह से खंजरीली घाट का नाम सुन कर मैं भी थोड़ा सा डर गया।

मैं उसकी बातें सुनकर कुछ गुस्से में आकर जोर से बोला – "अरे तू साफ साफ बताएगा भी कि हुआ क्या है?"

रॉकी – "बताता हूं।''

इतना कहकर उसने एक लंबी सांस भरी और बोला – "मैं शहर से वापिस आ रहा था तभी मुझे रास्ते में एक काला सा भयंकर आदमी दिखाई दिया। वो बहुत ज्यादा घबराया हुआ था। उसने मेरी ओर कार रोकने का इशारा किया।''

इतना कहकर रॉकी चुप हो गया।

मैं फिर से गुस्से में बोला – "तूने कार रोकी?"

रॉकी – "हां रोकी थी।''

मैं गुस्से से बोला – "तो फिर क्या हुआ?''

रॉकी – "उस काले आदमी ने मुझसे कहा कि अगर मैं आगे गया तो मारा जाऊंगा। आगे एक बूढ़ा आदमी सड़क पर जा रहा है। वो एक दानव है और मुझे मार डालेगा। लेकिन मुझे हर हालत में अपने

घर आना था। मैने उस काले आदमी से उस दानव से बचने का तरीका पूछा।''

मैं रॉकी के चुप होते ही फिर बोल पड़ा – "फिर उसने क्या कहा?"

रॉकी – "उसने कहा कि उस बूढ़े को अपनी कार में बिठा लेना और उससे एक शब्द कहना - मौत।''

ये सुनकर मैं भी थोड़ा सा डर गया और डरते हुए बोला – "फिर क्या हुआ?''

रास्ते में उस बूढ़े से व्यक्ति ने मुझे कार रोकने के लिए कहा। वो बूढ़ा बहुत खतरनाक लग रहा था उसके पास में एक काले रंग का बैग था। वो कार के अंदर बैठ गया। मुझे ऐसे लग रहा था कि जैसे ये बूढ़ा मुझे अभी मार डालेगा। मैने डरते हुए कहा - मौत।''

इतना कहकर रॉकी खामोश हो गया।

मैं फिर गुस्से से बोला –"तो फिर क्या हुआ?"

रॉकी – "ये सुनकर वो बूढ़ा थर्र थर्र कांपने लगा और अपने दिल पर हाथ रखते हुए अपनी आंखे बंद कर ली।''

मैं बोला – "आगे क्या हुआ?"

रॉकी – " मैंने जब कार रोककर उसी सांसे चेक किया तो वो मर चुका था।''

ये सुनकर मैं थर्र थर्र कांपने लगा।

रॉकी – "मैंने डर के मारे उसकी लाश वहीं पर सड़क के किनारे फेंक दी।

वो बूढ़ा आदमी मुझे आते वक्त उस घाट के पास हर जगह खड़ा दिखाई दिया था। वो मुझे अपनी बगल वाली सीट पर बैठा हुआ भी नज़र आया था। वो मेरे पीछे पड़ा है। वो मुझे मार डालेगा। दोस्त मुझे बचा ले। मैं मरना नहीं चाहता। वो अब भी यहीं कहीं है।''

रॉकी की ये बात सुनकर मैं थर्र थर्र कांपने लगा और डरते हुए अपने कमरे में चारों और अपनी नजर दौड़ा दी लेकिन वहां कोई नहीं था। रॉकी अब भी बहुत डरा हुआ था और बार बार दरवाजे की और देखे जा रहा था।

मैने कुछ सोचते हुए उससे पूछा – "लेकिन वो बैग कहां है?"

ये सुनकर रॉकी डर गया और बोला – "वो मेरी कार के अंदर ही है।''

मैं बोला – "हो सकता है उसकी आत्मा उस बैग के पीछे पड़ी हो। उस बैग में है क्या?"

हिन्दी लेखक परिवार

रॉकी डरते हुए कंपकंपाती आवाज के साथ बोला - "मुझे नहीं मालूम।''

"देख रॉकी! आज नही तो कल पुलिस तुझ तक पहुंच ही जायेगी। और फिर तुझे फांसी पर चढ़ा देगी। अब तो बचने का एक ही रास्ता है?" मैने कहा।

रॉकी जोर से बोला – "वो क्या?"

"वो बैग वापिस उसकी लाश के पास फेंक आ।'' मैने कहा।

ये सुनकर रॉकी थर्र थर्र कांपते हुए बोला – "मैं वहां वापिस नहीं जाऊंगा। प्लीज दरवाजा मत खोलना वो बूढ़ा बाहर ही खड़ा होगा।

मुझे बहुत डर लग रहा है।''

हालांकि डर तो मुझे भी बहुत लग रहा था। शरीर पूरी तरह से बर्फ की तरह जम चुका था।

लेकिन मैंने कुछ साहस जुटाते हुए कहा – "रॉकी तूं फांसी से बचना चाहता है ना|"

रॉकी ने बिना कुछ जवाब दिए हां में सिर हिला दिया।

"तो चल मेरे साथ।''

रॉकी – "लेकिन कहां।''

मैंने कहा – "वो बैग लेने के लिए।''

रॉकी – "मुझे बहुत डर लग रहा है।''

"अरे कुछ भी नहीं होगा। तूं चल मेरे साथ" इतना कहकर मैंने उसका हाथ पकड़ा और दरवाजे के पास ले गया।

मैंने डरते हुए कंपकंपाते हाथों से दरवाजा खोला और चारों और नज़र दौड़ाई। बाहर कोई भी नहीं था। सिर्फ काला अंधकार छाया हुआ था। सामने रॉकी की कार खड़ी थी। हम दोनों डरते हुए उस कार के पास गए। कार की पीछे की सीट पर एक काले रंग का बैग रखा हुआ था। मैंने खिड़की खोली और वो बैग उठाकर हम दोनों डरते हुए तेजी से भागकर फिर से घर के अंदर घुस गए और दरवाजा बंद कर लिया।

मैंने उस बैग को देखते हुए कहा – "इस बैग में आखिर है क्या? पैसे या कुछ और ?''

मैंने उस बैग को खोला। उसके अंदर एक नया लैपटॉप था। मैंने लैपटॉप चालू किया

लेकिन उसमे पासवर्ड लगा हुआ था। मैने बहुत खोलने की कोशिश की लेकिन वो नहीं खुला।

रॉकी–"यार! गलत पासवर्ड लगाने से ये लैपटॉप खराब हो सकता है।"

मैंने कहा–"देख रॉकी जब तक ये लैपटॉप हमारे पास है तब तक हम मुसीबत में है। पुलिस इस लैपटॉप के जरिए लोकेशन ट्रेस करके हम तक पहुंच सकती है। हमें इस लैपटॉप को वापिस उस लाश के पास रखकर आना होगा।"

रॉकी ने हां में सिर हिला दिया। मैंने फिर से वो लैपटॉप उस बैग में डाला और हम दोनों कार में आकर बैठ गए।

मैंने डरते हुए रॉकी से पूछा – "तू ड्राइव तो कर लेगा ना या फिर कार मैं चलाऊं।"

रॉकी ने अपना पसीना पोंछते हुए कहा – "मैं चला लूंगा।"

इतना कहकर उसने कंपकपाते हाथों से कार स्टार्ट की और धीरे धीरे चलाते हुए हम दोनों उस खूनी खंजरीली घाट की और जाने लगे।

क्रमशः अगले अंक में ...

मीनू सिंह की दो कविताएँ

वाराणसी उत्तर प्रदेश

मौन से मौन का संवाद

हालात थे बिगड़े
क्यूं आए नहीं तुम
था दर्द मुझे कितना
दवा लाए नहीं तुम
घर जल रहा था मेरा
तेरे सामने मगर
दरिया था पास फिर
क्यूं पानी लाए नहीं तुम
मिलना न मिलना ये तो
किस्मत की बात थी
कोशिश किए बिना
क्यूं भला हार गए तुम

पापा की गुड़िया

पापा तेरी गुड़िया
सयानी हो गई
गैरो के घर की
वो रानी हो गई
मां के आंखों का
काजल थी वो
जाने किसकी
आंखों का पानी हो गई
भैया के बांहों में
खेली थी वो
बाबा के कांधे पे
झूली थी वो
मेले में भी देखो
अकेली हो गई
पापा तेरी गुड़िया
सयानी हो गई|

हिन्दी लेखक परिवार

जयहिंद

~ प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला
महाविद्यालय मंडला(मप्र) - 481661

1.भारत माँ का लाल हूँ,दे सकता मैं जान।
करता हूँ मन-प्राण से,मैं इसका यशगान।
आर्यभूमि जगमग धरा,जगा रही नित कर्म,
इसकी गरिमा,शान पर,मैं हर पल क़ुर्बान।।
2.भगतसिंह,आज़ाद का,अमर सदा बलिदान।
ऐसे पूतों ने रखी,भारत माँ की आन।
कर्म रहे जिनके प्रखर,बने वही विश्वास,
ऐसे वीरों ने दिया,हमको नव अरमान।।
3.तीन रंग की चुनरी,जननी की पहचान।
हिमगिरि कहता है खड़ा,मैं हूँ तेरी शान।
केसरिया बाना पहन,कर्म कर रहे वीर,
अधरों पर जयहिंद है, जन-गण-मन का गान।।
4. अमर जवाँ इस देश के, भरते हैं हुंकार।
आया जो इस ओर यदि,देंगे उसको मार।
रच डाला इतिहास नव,करके चोखे कर्म,
दुश्मन का हमने किया,हर युग में संहार।।

~ अनिल कुमार केसरी

वरिष्ठ अध्यापक 'हिंदी'
ग्राम व पोस्ट देई, तहसील नैनवा, जिला बूंदी, राजस्थान 323802
chocaletrock@gmail.com

नारी, अब अबला कहाँ हैं

उसने धरती नापी, अंबर नाप लिया है।
अंतरिक्ष तक वह पहुँच गई,
क्या, नारी तब भी अबला है!
दुनिया के हर पर्वत को लांघा,
हर ऊँचाई को उसने नाप लिया है।
तुम कहते हो, नारी अबला है!
सीमा पर भी उसका प्रताप दिखा है।
उसके अबला होने की कहानी,
अब तक पुरुष ही रचता आया है।
नारी, युग-युगांत से अबला है!
समाज में ऐसा ही चलता आया है।
युग के पाषाण हृदय पर नारी,
अब खुद अपनी कहानी लिखती हैं।
अपनी क्षमता के बल पर नारी,
अब एक नये इतिहास को रचती है।
अपनी पहचान बनाकर नारी ने,
खुद की कहानी में सबला आप लिखा है।
नारी, अब अबला कहाँ है,
उसने धरती नापी, अंबर नाप लिया है।

आनंद की तलाश

~ सुप्रिया श्रीवास्तव, रांची, झारखंड

आनंद की तलाश ने वेदना ही दिया।
है तू कहां? आज, जीवन ही न रहा
सांसों के किनारों पर, मैं हूं अब खड़ा।
चीखता- चिल्लाता, आनंद है कहां...
हाय! आनंद है कहां?
बचपन भी बीता दी....
जवानी भी लुटा दी.....
बुढ़ापे में पुकारता,
आनंद है कहां....?
घर- बार भी निहारता
अब संसार भी निहारता
आनंद की तलाश में.....
अब प्राण भी पुकारता...
आनंद है कहां.....?
हाय! आनंद है कहां.....?
परिवार छूट गए
आसियाना छूट गए
राहों में जो फूल थे
वे आज सूख गए
होठों के वे सारे
मुस्कान छुप गए
प्राणों के अब सारे...
द्वार खुल गए।
काया वे सारे...
जंजाल छूट गए
आनंद है कहां.....
हाय! आनंद है कहां..?
मंदिरों में ना भटका
गुरुद्वारे से ना गुजरा...
आनंद की तलाश में
घर - बार में ही अटका
आज प्राण है पुकारता
हरी नाम है पुकारता
आनंद है यहीं पे...
हो, आनंद है यही पे...

मेरा मौन ...

सुनो ना
चलो! चुपचाप बैठते हैं
आज! मौन से मौन को पढ़ते हैं
मौन रहकर! मौन को समझते हैं
चलो ना
आज! मौन से मौन को पढ़ते हैं
मेरा मौन ...
मतलब
मैं थक चुकी हूँ, संघर्ष करते-करते
अब कुछ नहीं बचा संघर्ष के लिए
मेरा मौन ...
मतलब
मैं थक चुकी हूँ
अपनी भावनाओं को
तुमसे ज़ाहिर करते करते
लेकिन
अब मेरे पास वह शक्ति नहीं है
जिससे
मैं तुमसे और कुछ बता सकूं
मेरा मौन ...
मतलब
मैंने अपने जीवन में
परिवर्तन को स्वीकार कर लिया है
और
अब मैं कोई
शिकायत नहीं करना चाहती
मेरा मौन ...
मतलब
मैं खुद का वैद्य बन चुकी हूँ ...
और
अब मैं सब कुछ
भूलने की कोशिश कर रही हूँ
यहां तक कि ...
तुमसे जुड़ी सारी अपेक्षाओं को भी...
मेरा मौन ...
मतलब
मैं शांतिपूर्वक, अपनी इच्छा से
प्रसन्नता के साथ
आगे बढ़ने की कोशिश कर रही हूँ
हो सके तो समझना
मेरे मौन को ...

~ इंदिरा शर्मा,
लखनऊ, उत्तरप्रदेश

~ शिखा खुराना

चाय की दावत

आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
जाने का समय आ जाए जाने कब बजाते ही चुटकियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
स्वाद का आनंद पाने को निभाते हैं चलो दोस्तियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
छोटी सी ये जिंदगी लगती बहुत बड़ी है
संघर्ष करते रहने को बनानी हैं मजबूतियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
अभी करना है बहुत कुछ अभी पाना है बहुत कुछ
इससे पहले की आ जाएं जाने की घड़ियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
कुछ दोस्त रहते हैं, कुछ चले जाते हैं
बच्चे बड़े होते हैं और उड़ जाते हैं
अकेले कैसे रहें, आओ मिटाएं ये तन्हाईयां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
अंत में प्यार को समझना है हमें
सितारों के ऊपर नहीं साथ ले जानी है ये दुनिया
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
परवाह हमारी करता है जो,
कद्र कर लेते हैं उसकी कर लेते हैं शुक्रिया

आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
चिंताओं को जाने देते हैं, करते हैं थोड़ी मस्तियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
मेरे मरने पर आंसू बहाओगे भी गर तुम तो मैं कैसे महसूस करुंगा
तो क्यों ना अब मेरे ग़म बांट लो साथ में भर लो सिसकियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
फूल भेजोगे लेकिन खुशबू मैं ना ले पाऊंगा
तो क्यों ना मेरे साथ सजा लो फूलों की क्यारियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
तुम करोगे तारीफें मेरी लेकिन मैं ना सुन पाऊंगा
तो क्यों ना अभी ही कर लो मेरी सिफतियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
तुम भूला भी दोगे कल पर मैं जान नहीं पाऊंगा
तो क्यों ना आज ही भुला दो तुम मेरी गलतियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
याद भी करोगे मुझे तुम पर मुझे महसूस ना होगा
तो क्यों ना सजा लो मुझे बनाकर अपनी स्मृतियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
समय बिताना भी चाहोगे भी तो कैसे जब मैं ही ना रहूंगा
आज ही कर लो मुझसे दिल की सारी बतियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां
तलाशोगे मुझे जब सुनोगे मेरे चले जाने की खबर
कैसे समझाओगे खुद को किससे बांटोगे खामोशियां
आओ मिलकर लेते हैं सुर्र सुर्र चाय की चुस्कियां

हार जीत के खेल - कुंड़लियां

जब तक धरती पर रहो,रखो सभी से मेल।
चंचल बन मत खेलना,हार जीत के खेल।।
हार जीत के खेल,यहां कब मान बढ़ाते।
गिरता है सम्मान,सभी मिलकर ठुकराते।।
कह मूरत कविराज,खेलना छोड़ो- रे-अब।
मिट जायेगी शान,भले तुम सुधरोगे जब।।

~ डॉ.मूरत सिंह यादव
लमायचा दतिया मध्यप्रदेश

सफर का आगाज़ करना चाहिए

मिलेगी मंजिल जरूर यह सोचकर,
सफर का आगाज़ करना चाहिए।
पहुँचेगे जरूर बुलंदियों तक,
इसी हौसले से परवाज़ करना चाहिए।।
हम उस उपवन के वासी हैं,
जहां खिलती है मिल्लत के फूल।
उस फूलों से महकती है जिंदगी,
इस चमन पे हमें नाज़ करना चाहिए।।
वतन की शान बचाने के लिए,
वीर सपूतों ने दी है कई कुर्बानियां।
भारत के ऐसे वीर सपूतों पर,
हमें हर पल नाज़ करना चाहिए।।

~ चाँद बहार
लेखक सह पत्रकार
फलका, कटिहार बिहार

मेरा प्रेम

~ जयचंद प्रजापति 'जय'

पता..जैतापुर, हंडिया, प्रयागराज

मेरा प्रेम गहरा है
कई सालों तक
आजमा सकते हो
हर थपेड़ों को सह लेगा
खंडहर हो जायेगा
अडिग रहेगा, मेरा प्रेम
निस्वार्थ मन से
तुम्हारे ह्रदय में रहूंगा
जर्जर भले हूं
तुम्हे एक दुनिया से
दूसरी दुनिया को ले जाऊंगा
तुम्हारे चेहरे को
तुम्हारे सांसों तक
शालीनता से
हर रस्म अदायगी करूंगा
मेरा प्रेम
निठ्ठल्लों वाला प्रेम नहीं है
तुम्हारी मुसीबतों में
विशाल पर्वत की तरह
फौलाद रहूंगा
मेरा प्रेम
ताजगी से भरा है
खिले पुष्प की तरह
एक मुस्कान से भर दूंगा
मेरा प्रेम
पवित्र भावों से भरा है
एक दुनिया समाहित है
तुम्हे मौका मिले
झांक लेना एकदिन

हिन्दी लेखक परिवार

पहाड़ की चोटी पर खड़े पुरखा

~ रेमोन लोंग्कु
कुठुंग गाँव, चांगलांग जिला, अरुणाचल प्रदेश
remonlongku1@gmail.com

पहाड़ की चोटी पर खड़े पुरखा
प्रकृति की गीत
गा रहे हैं
निराश, लाचार पुरखा हमारे
प्रकृति को पुकार रहे हैं-
वर्षा आओ तुम
बीजों में अंकुर भर दो
धूप आओ तुम
फसलों को हरी-भरी कर दो
हवा आओ तुम
फसलों को खा रहे कीटों को
उड़ा ले जाओ
बिजली आओ तुम
धान को नष्ट कर रहे
हाथियों के झुंड को
भगाओ तुम

~ रोहताश वर्मा 'मुसाफिर'
खरसंडी राजस्थान

लक्ष्य की धूप

लक्ष्य की धूप में
तपकर निकलना है।
तोड़ कर पत्थर
पहाड़ों से ढलना है।
रूकावटें लाख होंगी,
ज़मीं आंख होगी,
फिर भी हौसला लिए
अंधेरों में चलना है।
तूफान भी उठे होंगे,
पैर भी थके होंगे,
फिर भी हिम्मत से
गिरते हुए संभलना है।
लक्ष्य की धूप में
तपकर निकलना है।

पहचान बना ले

जहां में अपनी पहचान बना ले!
खुद को ज़रा इंसान बना ले!
संग क्या लेकर जाना है
आखिरत का सामान बना ले!
कलम के दलदल से आ दिल में
गालिब का इक दीवान बना ले!
मजहब मजहब लड़ता है क्यों
मजहब अपना ईमान बना ले!
मंदिर -मस्जिद में रक्खा है क्या
दिल में गर भगवान बना ले!
मिट जाती हैं फिरकों में नस्लें
भाईचारे से राणा-सुलतान बना ले!
रहे परचम जहां में मेरे वतन का
'मुमताज़' यही अरमान बना ले!!

~ मोहम्मद मुमताज हसन
रिकाबगंज, पोस्ट टिकारी,
ज़िला गया बिहार -824236

मैं सही, तुम गलत हो

~ अनिल कुमार केसरी

मैं सही हूँ; तुम गलत हो',
सब इसी बात पर भ्रमित हैं।
मैं गलत हो ही नहीं सकता,
हर आदमी को यह गफ़लत हैं।
आदमी ही तो गलतियाँ करता है,
गलतियाँ, आदमी की निशानी हैं;
फिर, मैं सही हूँ, तुम गलत हो,
यह बात कहाँ से आ जाती है।
थोड़ा गहराई से सोचना,
उन गलतियों पर;
जहाँ,
तुमको लगा तुम सही थे,
सामने वाला बिल्कुल गलत है।
क्या आपका मानना भी यही है!
जब हम गलतियाँ कर ही रहे हैं,
तो मान लेने मैं भी क्या है!
गलतियों से हम सीखते हैं,
अपने आदमी होने की,
यह कितनी मुनासिब वजह है!
सच कहूँ, तो हम जानते हैं-
हमारे गलत होने की बात को,
मगर,
सामने वाले का सही होना!
बर्दाश्त नहीं होता,
आदमी की औकात को।
तुम, कब तक बचोगे ?
तुम, कब तक बचोगे ?
तुम, कब तक रहना चाहोगे ?
जब, सारे पेड़-पौधे सड़ जायेंगे ?
जब, सारे बीज मर जायेंगे ?
क्या तुम...,
तब भी बचना चाहोगे ?
यह, तुम्हारी गलतफ़हमी है,
कि, तुम ही तुम बचोगे ?
बाकी, सब मिट्ठी हो जायेंगे।
तुम, सदा शाश्वत रहोगे ?
क्या तुम...,
उस विराने में रह पाओगे ?
यह, अमर सत्य है;
कि, तुम और मैं, सब मिटेंगे,
उस बूढ़े दरख़्त की तरह,
जो, पत्ता-पत्ता, उम्रभर झड़ता रहा

और खाली हो गया;
किसी बैंक-बैलेंस की तरह
धीरे-धीरे,
ख़र्च होते-होते।
क्या तुम...,
तब भी बचना चाहोगे ?
जब, तुम्हारी महक मिट जायेगी,
जब, तुम्हारा फूल मुरझा जायेगा,
सूखी डालें, सूखी टहनियाँ
रखकर,
क्या तुम...,
कोई बगीचा खिला पाओगे ?
क्या तुम...,
तब भी रहना चाहोगे ?
क्या तुम...,
तब भी बचना चाहोगे ?

विज्ञापन

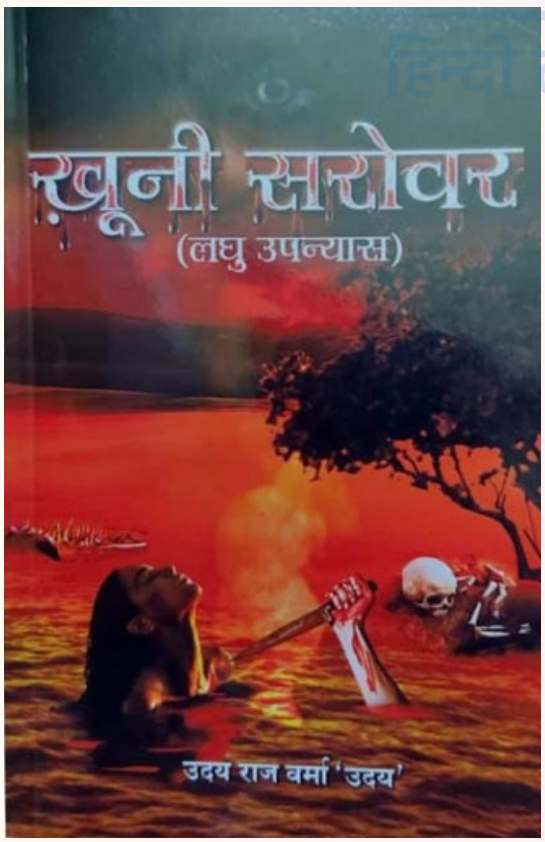

रहस्यमय तरीके से लोगों के खून से अपनी प्यास बुझाने वाला खूनी सरोवर के चंगुल से आज तक खुद को गिनाने वाले भी नहीं बच सके। लेकिन उस तिलस्मी सरोवर से लिया एक पिद्दी से बच्चे ने पंगा। कौन हुआ नंगा जानने के लिए खूनी सरोवर को अमेजोन व फ्लिफकोर्ट से अभी ऑर्डर करें।

पुस्तक विचार

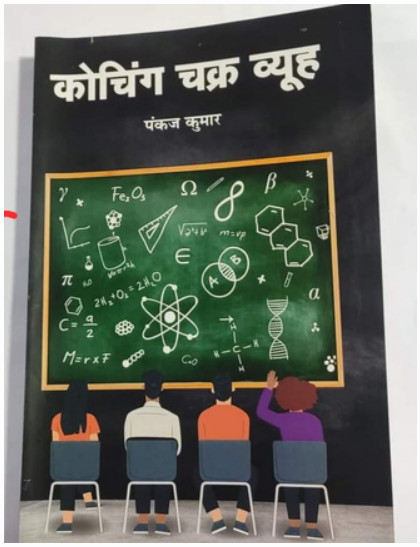

कोचिंग में बाजारीकरण की हक़ीकत बयाँ करता :- कोचिंग चक्र व्यूह

पुस्तक -: कोचिंग चक्रव्यूह
लेखक -: पंकज कुमार
पब्लिशर-: निखिल पब्लिकेशन
समीक्षक-: उदय राज वर्मा 'उदय'

कोचिंग चक्र व्यूह पंकज कुमार द्वारा लिखित उपन्यास है जिसमें पंकज कुमार ने कोचिंग करने वाले छात्रों के सामने आने वाली कठिनाइयों का बहुत बारीकी से चित्रण किया है| कुश नाम का छात्र जो खुद को टैलेंटड समझता है बड़ी कोचिंग में पहुँचते ही उसका टैलेंट चूर चूर हो जाता है| आज परीक्षा में असफल होने पर अयोग्य मन लिया जाता है, असफलता के पीछे कारण चाहे जो कुछ भी हो| शहर में बड़ी कोचिंग खुलने से कोचिंग वालों के साथ साथ अन्य धंधे फलते फूलते हैं| एक गरीब छात्र को रहने के लिए अच्छा कमरा भी नहीं मिल पाता और ऊपर से बाहर से आने वाले छात्रों से अवैध वसूली का भी धंधा| क्योंकि बाहर से आने वाले छात्र लड़ाई झगड़े में पड़कर अपना कैरियर खराब नहीं करना चाहते इसलिये चुप रहते हैं| टीचर द्वारा कद काठी प्रान्त के आधार पर मजाक उड़ाकर जलील करना एजी सर का उदाहारण हैं| परीक्षा के समय छात्रों का डिप्रेशन में जाना साथ ही घर वालों का अनावश्यक दबाव डालना व अधिक डिप्रेशन में आत्महत्या की तरफ कदम उठाना | साथ ही आम आदमी की बात सरकार द्वारा अनसुनी करने पर मजबूर होकर धरना प्रदर्शन का मार्ग अपनाना और रोड जाम करके ये बात भूल जाना की रोड जाम होने से किसी की जान जा सकती है तो किसी छात्र का भविष्य बर्बाद हो सकता है जैसे छोटी छोटी लेकिन गम्भीर समस्या की तरफ बहुत सहज सरल ढंग से चित्रण किया गया है

पुस्तक विचार

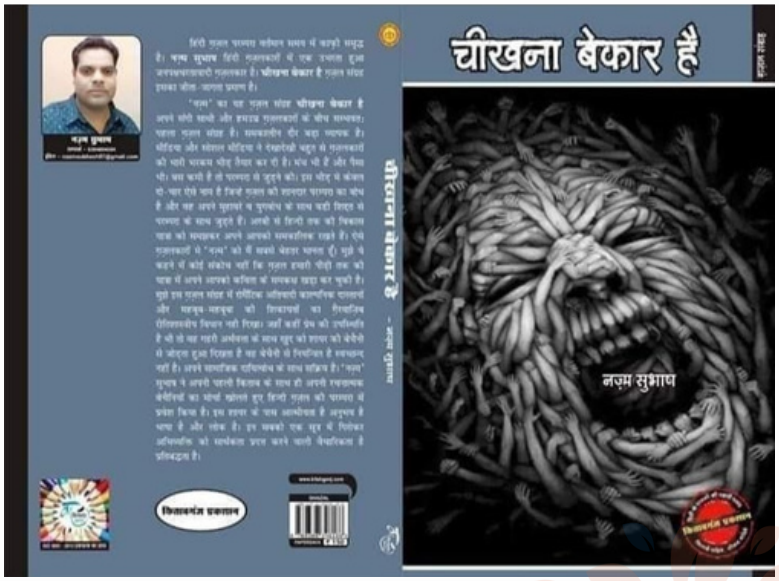

पुस्तक - चीख़ना बेकार है
समीक्षक - डॉ कविता नन्दन
ग़ज़लकार - नज़्म सुभाष
प्रकाशन - किताबगंज प्रकाशन, सवाईमाधोपुर व दिल्ली
संस्करण - प्रथम, नवंबर 2018
पृष्ठ - 95
मूल्य - 150 रुपये

चीखना बेकार है

हिन्दी में ग़ज़लें ख़ूब कही गई हैं। हिन्दी समाज में पढ़ी और सुनी भी ख़ूब जाती रही हैं। फिराक गोरखपुरी, गोपाल दास नीरज, दुष्यंत कुमार, अदम गोंडवी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और बहुत करीब तक खींच कर लाएँ तो कुमार विश्वास जैसे कुछ गिने-चुने नाम हिन्दी ग़ज़लकारों के मिलेंगे जिन्हें आम जनता मोहब्बत से पढ़ती और रेडियो, टीवी के जरिए सुन भी लेती है। इन सभी में कुमार विश्वास बिलकुल ताज़े हैं और सशरीर हमारे बीच मौज़ूद हैं लेकिन उनकी शायरी अब शुद्ध रूप से व्यावसायिक हो चुकी है जिसमें चुहलबाजी ज़्यादा है और मेहनतकश आबादी की पीड़ा छंटाक भर भी नहीं। मैंने किताबों की बड़ी दुकानों से लेकर बुक स्टॉल तक दुष्यंत की 'साये में धूप' को ख़ूब बिकते हुए देखा है और मैं ख़ुद भी उसका पाठक और ग्राहक रहा हूँ। फिराक गोरखपुरी साहब, अदम गोंडवी साहब सिर्फ बड़ी साहित्यिक दुकानों पर ही मिलेंगे। नीरज और दुष्यंत यह दोनों ही शायर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं लेकिन पूँजीवादी प्रकाशकों का दबदबा बढ़ जाने से इनका सहज उपलब्ध होना भी अब कठिन हो जाएगा। ग़ज़ल अपनी विधा में जहाँ छंदों की रूढियों से बंधी हुई है वहीं बदलते वक़्त के साथ उसने वैचारिक धरातल पर आधुनिकता को ग्रहण भी किया है।

यही वह बड़ी वज़ह है कि आज इस विधा से जुड़ी हमारी तीन पीढ़ियाँ सक्रिय हैं। सोचने की बात है कि इतनी पसंद की जाने वाली ग़ज़ल में क्यों गिने-चुने नाम ही हमारी ज़हन में उभरते हैं और हम उन्हीं तक सिमट कर रह जाते हैं। बहुत गंभीरता से विचार करने पर पाता हूँ कि जिस दर्द को आम आदमी रोज़ाना भोगता है उसे शायरी की दुनिया में तलाश करते हुए जब शायर तक पहुँच जाता है तो उसे लगता है कि जिस अभिव्यक्ति की वह तलाश कर रहा है, यहाँ नहीं मिली और वह लौट जाता है उन्हीं गिने-चुने कुछ शायरों के पास लेकिन कब तक वह इस तरह लौटता रहेगा; एक वक़्त आता है जब वह तलाश बंद कर देता है। हिन्दी ग़ज़ल के साथ भी यही हो रहा है। हिन्दी ग़ज़लकारों के संग्रह उर्दू शायरों और मुशायरों वाली कहन की रवानगी, झूम उठने वाली मस्ती के साथ पीड़ा की मुखर अभिव्यक्ति के स्तर पर कामयाब नहीं हो रहे हैं। जब तक शायर में युगबोध नहीं होगा, पीड़ा के प्रति छटपटाहट, बेचैनी नहीं होगी और मेहनतकश आबादी के संघर्ष की अभिव्यक्ति नहीं होगी, शोषितों का आक्रोश नहीं होगा तब तक जनता के बीच स्वीकार्यता कैसे संभव है ? इसीलिए पिछले चार दशकों से नीरज और दुष्यंत की ग़ज़लें सुनकर लगता है बस हिन्दी ग़ज़ल साहित्य इनमें ही सिमट कर रह गया है।

ऊपर लिए गए सभी बड़े ग़ज़लकारों की ख़ासियत एक जगह इकठ्ठी कर दी जाए तो जो एक नए ढंग का अंदाज़ शायरी की दुनिया में आएगा, उसी का नाम है नज़्म सुभाष!

मुसलसल घाव भीतर हो रहे हैं,
तुम्हारे लफ़्ज़ ख़ंज़र हो रहे हैं

'चीखना बेकार है' किताबगंज प्रकाशन, राजस्थान से प्रकाशित नज़्म सुभाष का पहला ग़ज़ल संग्रह है। इस बेहतरीन ग़ज़ल संग्रह की शानदार भूमिका युवा आलोचक उमाशंकर सिंह परमार ने लिखा है। इस संग्रह में परिचायक की भूमिका निभाई है रणजीत कुमार सिन्हा ने।

विद्वानों की इस त्रयी ने 'चीखना बेकार है' को संग्रहणीय ग़ज़ल संग्रह बना दिया है। 96 पृष्ठों का यह संग्रह इतना बेहतरीन है कि आपके पास समय की तंगहाली न हो तो एक बार में शुरू से अंत तक पढ़ जाएंगे और पढ़ने के बाद महसूस करेंगे कि आप को अपना शायर मिल गया। झूठ चीखा इस तरह दंगेनुमा हालात में देश ख़ुद ही मान बैठा शांति है हर बात में नज़्म सुभाष हमारे मौजूदा दौर के ऐसे शायर हैं जिन्हें संघर्षों ने गढ़ा है। लखनऊ में रहते हैं और प्रतिभा संपन्न होते हुए भी देश के करोड़ों पढ़े-लिखे नौजवानों की तरह संघर्षशील जीवन जीने को अभिशप्त हैं। इसीलिए वह स्पष्ट कहते हैं "मेरा तेवर तीखा है/इसमें दोष सभी का है/संदल जैसी ख़ुशबू में/श्रम का स्वेद महकता है/कहकर मैं शर्मिंदा हूँ/साये तक ने लूटा है/बोझ सरीखी है डिग्री/ये अभिशाप सदी का है।" जिस भ्रष्टाचार, अपराध और दुर्व्यवस्था का शिकार आज पूरा देश है, उससे शायर भी रू-ब-रू होता है और पूछ बैठता है -

क्या किसी तक़रीर में गूँजा कभी ये मुद्दा
आदमी की भीड़ में क्यों आदमीयत गुमशुदा

सत्ता जब पूँजीपतियों की कठपुतली बन जाती है और बुर्जुआ शोषण चरम पर पहुँच जाता है सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और संपूर्ण न्यायिक-प्रशासनिक व्यवस्था तहस-नहस होने लगती है। श्रम का अवमूल्यन बढ़ जाता है जिसके संत्रास को मेहनतकश आबादी भोगती है। यदि रचनाकार युगबोध से विमुख हो कर सृजनात्मक लेखन करता है तो वह चेतन भगत की तरह पूँजीवादी व्यवस्था का कामयाब लेखक तो बन सकता है लेकिन उसकी लोकप्रियता शोषक वर्ग तक ही सीमित रहती है। किसी मज़दूर को 'हाफ गर्लफ्रैंड' पढ़ कर ऐसा क्या मिल सकता है जो उसे संघर्ष के लिए ऊर्जा देगा। वहीं नज़्म सुभाष जैसे रचनाकार जिनकी पूँजी जनपक्षधरता है संघर्षरत जनता के भीतर परिवर्तनकामी प्रगतिशील चेतना का विकास करते हैं और एक बेहतर कल की बुनियाद तैयार करने में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। सत्ता के दोगलेपन को वह चिह्नित करते हैं।

झोपड़ी को तोड़ती है महल की दरकार है
इस तरह जनतंत्र वाली लोकप्रिय सरकार है

रचनाकार का युगबोध कहीं से आयातित माल नहीं बल्कि समग्र जीवन के निजी अनुभवों से निखरता है। इस साधन संपन्न देश को जिस तरह लूटा जा रहा है उसकी नंगी तस्वीर पेश करता यह व्यंग्य नज़्म की समर्थ भाषा-शैली का बेहतरीन उदाहरण है -

चील-कौवे, बाढ़, लाशें, नाव, पानी देखिए
आँकड़ों में देश की स्वर्णिम कहानी देखिए
सूखते तालाब में ज़िंदा हैं कैसे मछलियाँ
केंचुओं के जिस्म पर चस्पा निशानी देखिए

विषयों का वैविध्य और समर्थ अभिव्यक्ति वाली भाषा शायर की अपनी शैली है और जिस आत्मीयता के साथ उनकी कहन पेश होती है, सोचने-समझने के लिए भरपूर स्पेस देती है। दुष्यंत कुमार के बाद हिन्दी ग़ज़ल में एक रिक्तता का अनुभव होता था जिसे नज़्म सुभाष ने बेहतरीन अंदाज़ में भरने की कोशिश की है। मैं अपने समकालीन शायरों में जिन शायरों को पसंद करता हूँ उनकी तुलना में यह युवा शायर अपनी प्रस्तुति में लाजवाब है। मेरा अपना मानना है कि 'चीखना बेकार है' हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में एक यादगार संग्रह होगा जिसे आने वाले वक़्त में लोग बार-बार पढ़ना चाहेंगे। उनकी चेतावनी वाले अंदाज़ के एक शे'र को आपके साथ छोड़ जाता हूँ -

गर फ़सादी ताक़तों पर चुप्पियाँ रह जाएंगी
देख लेना रक्तरंजित कुर्सियाँ रह जाएंगी

◆———————◆

उदयांचल श्रेष्ठ साहित्य सम्मान

उदयांचल साहित्य सम्मान उदयांचल में प्रकाशित किसी एक रचनाकार को दिया जायेगा। जिसका निर्णय पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर किया जायेगा। सम्मान की घोषणा पत्रिका के अगले अंक में की जाएगी और सम्मान पत्र रचनाकार को ऑनलाइन प्रेषित किया जाएगा।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाकारों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाता है और पत्रिका अथवा हिन्दी लेखक परिवार की तरफ़ से अभी किसी तरह की सम्मान राशि देने की व्यवस्था भी नहीं है।
हमारा प्रयास है भविष्य में उदयांचल के कलमकारों को सम्मान राशि दी जाये, जैसे ही इस तरह की कोई सुविधा बहाल की जाती है उचित माध्यमों द्वारा आप सभी को सूचित किया जाएगा। उदयांचल पत्रिका के आप संरक्षक बनकर या पुस्तक आदि का विज्ञापन देकर संबल प्रदान कर सकते हैं।
हमारा प्रयास है, केवल स्तरीय रचनाओं को ही पत्रिका में स्थान दें

~

आभार
सम्पादक

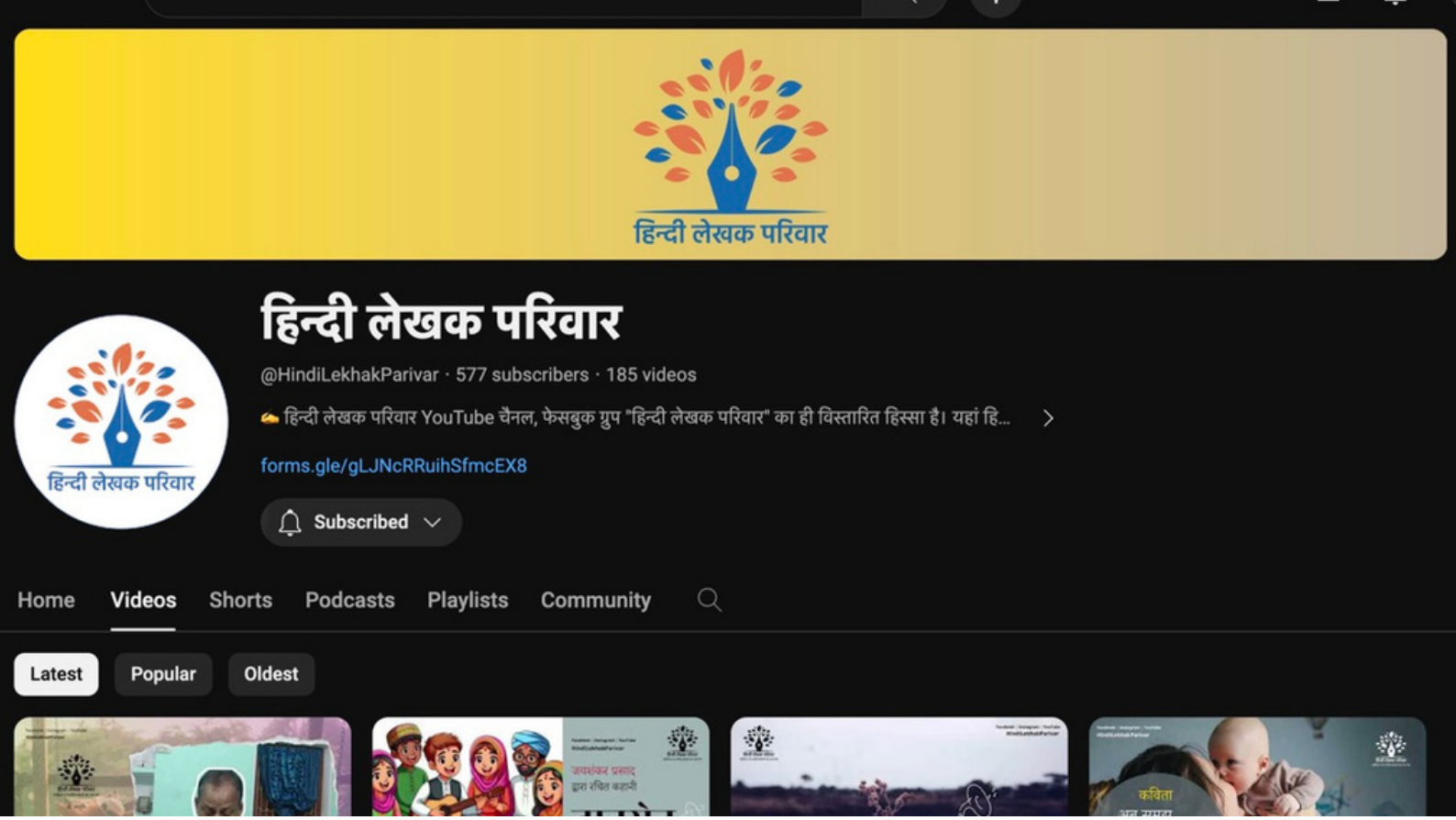

परिवार के YouTube मंच से जुड़ने के नीचे दिये गये लिंक पर क्लिक करें -

https://www.youtube.com/@HindiLekhakParivar/

यहाँ पर आप अपने पसंदीदा लेखकों, कवियों की रचनाएँ आवाज़ के धनी हिन्दी मित्रों की मधुर स्वर में सुन सकते हैं।

आप भी अपनी कविता, लघुकथा कहानियाँ और उपन्यास हमारे साथ परिवार के यूट्यूब मंच के सहारे लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

हिन्दी लेखक परिवार

इससे पहले कि प्लास्टिक कचरा विकराल रूप
लेकर पृथ्वी पर जीवन के लिए घातक बन जाये,
प्लास्टिक के प्रयोग विचार पूर्ण करें ...